International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डॉ भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक एवं राजनीतिक चंतन

राम बिहारी राम
शोध छात्र
वभाग:- राजनीति वज्ञान
ल लत नारायण म थला वश्व वद्यालय, दरभंगा

lkj la{ksi

प्रस्तुत शोध ''डॉ० भीम राव अम्बेदकर के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन'' से संबंधित है। इस शोध में शोधार्थी द्वारा डॉ० भीम jko vEcsndj ds lkekftd ,oa jktuhfrd fparu dks izdV djus ,oa egÙkk fl) djus dk yf{kr fd;k x;k gSA bl 'kks/k vkys[k ds }kjk Li"V drते हुए कहा गया है, कि डॉ० अम्बेदकर भारतीय सामाजिक–राजनीतिक परिपेक्ष्य में उदयीमान व्यक्तित्व थे। डॉ० vEcsndj dk lkekftd fopkj Fkk fd Hkkjrh; lekt ls v'i`';rk] vlekurk] foHksnhdj.k ,oa udkjkRed 0;ogkj dks nwj djds gh lerkewyd lekt dh LFkkiuk dh tk ldrh gSA jktuhfrd ifjis{; में डॉ० अम्बेदकर का दृष्टिकोण था कि राज्य की प्रत्येक जनता को Lok;Ùkk dk vf/kdkj nsdj] ekuoh; vf/kdkj dks 0;kid cukdj ,oa lkekftd LohÑfr ds lkFk lao/kkfud izko/kkuksa dks LFkku nsdj gh jkuhfrd fLFkfr dks etcwr ,oa izfrf"Br cuk;k tk ldrk gSA

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चंतकों में डॉ भीमराव अंबेडकर का स्थान व शष्ट रहा है। डॉ भीमराव अंबेडकर राजनीतिक चंतक ही नहीं बल्कि वह भारतीय सं वधान के शल्पकार, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, मानववादी थे। इन्होंने अपने जीवन में कई गौरव प्राप्त कए हैं जैसे भारत के प्रथम व ध मंत्री बाबासाहेब नवबुद्ध एवं उनके मरणोपरान्त भारत रत्न से भी नवाजा गया।

डॉ भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को हिंदू धर्म के अस्पृश्य जाति महार में हुआ था। इनके पताजी का नाम रामजी सकपाल तथा माताजी का नाम भीमाबाई था। इनके पताजी फौज में सूबेदार थे एवं अंग्रेजी भाषा के अच्छे जानकार थे। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर अपने पताजी के बारे में कहा करते थे क मैंने अपने पताजी से ही अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त कया है। अंबेडकर बहुत ही बड़े शक्षा प्रेमी थे उन्होंने कई वश्व वद्यालय से शक्षा ग्रहण कया। वे स्नातक की शक्षा मुम्बई के वश्व वद्यालय से 1915 में एम० ए० की शक्षा कोलंबिया वश्व वद्यालय से एवं 1916 में भारत में प्रांतीय अर्थव्यवस्था का वकास वषय पर अपना शोध ग्रंथ प्रस्तुत कया, जिस पर कोलंबिया वश्व वद्यालय ने उन्हें पीएचडी की उपा ध से सम्मानित कया। इस निबंध के कुछ अंश अमेरिकन जर्नल ऑफ सो शयोलॉजी मा सक के अंतर्गत प्रका शत हुए थे। यह कहना उ चत ही होगा क जीवन भर चलने वाले समाजशास्त्री व सामाजिक चंतक का यह प्रारंभ था। 1923 में डी० एस-सी० की डग्री द प्रॉब्लम ऑफ रूपी इट्स प्रोरिजन एंड सोलूशन वषय पर शोध प्राप्त की। वह बेहद शक्षा प्रेमी थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वद्यार्थी जीवन में अमेरिका में पढ़ते थे तो वह दो हजार से भी अ धक पुस्तक खरीदे थे जब वह मुम्बई मैं अपना घर बनाए थे। तो उसमें एक कमरा पुस्तकालय के लए बनाए थे ता क इसमें हमारी पुस्तके सुर क्षत रहे। वह कानून के बहुत बड़े वद्वान थे। भारतीय महापुरुषों में डॉ भीमराव अम्बेडकर सबसे अलग वचार एवं अनमोल थे जिन्होंने भारतीय समाज में पुराने सामाजिक वचारधारा को तोड़ दिया तथा एक ऐसी वचारधारा को स्था पत करने में सफल हुए जो हमेशा-हमेशा के लए याद कया जाएगा।

अम्बेडकर के सामाजिक और राजनीतिक चंतन को इस प्रकार समझा जा सकता है।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर भारतीय समाज में फैले जाति प्रथा, छुआ-छूत एवं पुराने वचार से उनके समाज को तो झेलना पर ही रहा था ले कन वह खुद अपने भी इससे अछूते नहीं थे। इतने बड़े वद्वान समाजशास्त्री मानव प्रेमी से भी भारतीय समाज एवं हिंदू धर्म के लोग इनसे घृणा करते थे, यह भारतीय समाज के लए दुर्भाग्य ही था। डॉ अंबेडकर ने सामाजिक भेदभाव से छुटकारा पाने के लए अपनी बातों को पत्रिका एवं संस्था के माध्यम से समाज के बीच रखा।

डॉ अंबेडकर ने समाज में जगह-जगह पर जन सभाओं को संबो धत करते थे और इसके माध्यम से लोगों को जागरूक करने का काम कया करते थे। वे कई संगठन भी चलाए जैसे इं डपेंडेंट लेबर पार्टी, हितकारी सभा, ए पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी, इत्यादि। वे अपने वचारों को कई पुस्तकों के माध्यम से सामाजिक स्तर को ऊंचा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उठाया जैसे शूद्र कौन थे (अक्टूबर 1946) की रचना की। चु क वे हिंदुओं के अमानवीय व्यवहार से काफी छुब्ध थे इस लए गहन मनन करने के बाद 14 अक्टूबर 1956 को वे लाखों समर्थकों के बीच नागपुर में बौद्ध धर्म को ग्रहण कए। वे 1955 में भारतीय बुद्ध महासभा की स्थापना कये। इन्हें वश्व बौद्ध सम्मेलन में 1956 में नव बुद्ध की उपा ध प्रदान की गई।

भीमराव अम्बेडकर एक समाज सुधारक एवं समाज व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का समर्थन करने वाले उदारवादी वचारक थे। वे कई सामाजिक वचार प्रस्तुत कए। जैसे वर्ण व्यवस्था का आलोचना, जाति प्रथा संबंधी वचार, अस्पृश्यता वचार इत्यादि।

वर्ण व्यवस्था- डॉक्टर भीमराव अंबेडकर चतुर्थवर्गीय व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) के प्रबल आलोचक थे। डॉ अम्बेडकर ने कहा क जाति व्यवस्था की जननी वास्तव में वर्ण व्यवस्था ही है। भारत से वर्ण व्यवस्था जब तक समाप्त नहीं होती तब तक समतामूलक समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। डॉ अंबेडकर ने भारत की वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था का व्यापक अध्ययन एवं शोध कया।

डॉ अंबेडकर ने कहा क वर्ण वभाजन में शूद्रों के हितों की रक्षा का कोई प्रावधान नहीं था यहां तक क शूद्रों के लए ज्ञान प्राप्ति भी मनाही थी। शक्षा व अपनी आत्मरक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लए जरुरी है, कन्तु चतुर्वर्ण व्यवस्था में शूद्रों के लए ये दोनों ही वर्जित थे। यही कारण था क अंबेडकर ने आजीवन इस व्यवस्था के वरुद्ध लड़ाई लड़े।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के अनुसार चतुर्थवर्ण व्यवस्था व्यक्ति में परावलम्बन को बढ़ावा देती है। बाबा साहेब के अनुसार मनुष्य को अपनी आधारभूत आवश्यकताओं के लए दूसरों पर आ श्रत नहीं रहना चाहिए। वे सामाजिक परिवर्तन की बात बताएं। उन्होंने कहा क वर्ण व्यवस्था से सामाजिक भेदभाव पनपता है और सामाजिक व्यवस्था में एक ही कार्य के लए भन्न- भन्न वर्गों के व्यक्तियों के साथ भन्न- भन्न क्रयाकलाप और नियम लागू करना मानवीयता के लए एक कलंक स्वरूप है। ऐसी बुरी सामाजिक व्यवस्था भारतीय समाज के अतिरिक्त कसी अन्य समाज में कभी नहीं रही है।

जाति प्रथा- डॉ अंबेडकर के अनुसार हिंदू समाज केवल जाति की क्रमबद्धत्ता ही नहीं है अनेक शत्रु गुटों का वह समूह है। अंबेडकर प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। भारतीय समाज में जाति प्रथा एक बड़ी समस्या थी जो आज भी बनी हुई है अतः डॉ भीमराव अंबेडकर का वचार था क भारत का समाज जाति वहीन समाज होना चाहिए ता क इससे समानता लाया जा सके। उनका मानना था क जाति प्रथा ब्राह्मणवादी की उच्चता को अस्पृश्यता का कारण मानते थे। इसके कारण ही समाज में एकता स्था पत नहीं हो रहा है।

अस्पृश्यता संबंधी वचार- भारतीय समाज में अस्पृश्यता भी एक गंभीर समस्या थी अस्पृश्यता अमानवीय थी। इससे समाज में एकता नहीं रह सकती थी। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर यह प्रमा णत कया की अस्पृश्यता मानवकृत दुर्गुण है ना क ईश्वरीय कृत है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आज भी भारतीय समाज में अस्पृश्य की स्थिति चंताजनक है अत: उनकी सामाजिक दशा को सुधारने के लए आ थक और सामाजिक प्रयत्न अपे क्षत है अम्बेडकर ने उल्लेख कया क भारतीय समाज में अस्पृश्यता अनूठी थी। यहां तक की ब्रिटिश सरकार ने भी और अछूतो की दुर्दशा को सुधारने के लए कुछ अच्छा नहीं कया।

भारतीय समाज की ब्राह्मणवादी मनुवादी व्यवस्था से सर्फ अस्पृश्य समाज ही नहीं दबे कुचले समाज की नहीं बल्कि पूरा देश प्रभा वत हुआ। देश और समाज की मुख्यधारा से इस वर्ग को अलग रखकर जो क्षति देश को हुई है उसकी भरपाई आज तक नहीं हो सकी है।

राजनीतिक चंतन- डॉक्टर अंबेडकर ने अपने राजनीतिक चंतन के अंतर्गत कई वचार प्रस्तुत कए हैं। जैसे भाषायी राज्य पर वचार, जनतंत्र संबंधी वचार, राज्य संबंधी वचार, शासन के कार्य संबंधी वचार, अ धकार संबंधी वचार, इत्यादि।

डॉ भीमराव अंबेडकर ने भाषायी राज्यो पर वचार करते हुए उन्होंने कहा क भाषाई राज्य समय की मांग है। उन्होंने इस पर दो तर्क प्रस्तुत कए हैं। 1- इससे लोकतंत्र का क्रयान्वयन आसान होगा, 2- इससे जातीय व सांस्कृतिक तनाव को दूर कया जा सकेगा। उनका अस्पष्ट मत था की सं वधान में इस बात का उल्लेख कया की हिंदी को राज्य में सरकारी कामकाज की भाषा बनाया जाना चाहिए जब तक हिंदी का समु चत वकास नहीं होता तब तक अंग्रेजी को चलने दिया जाए, ऐसा उनका वचार था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जनतंत्र- डॉक्टर अंबेडकर संसदीय प्रणाली के समर्थक थे। उनके अनुसार संसदीय शासन प्रणाली के 3 गुण है।

1. इसमें वंशानुगत शासन नहीं होता है।
2. इसमें कसी एक व्यक्ति की सत्ता नहीं होती है।
3. निर्वाचन प्रतिनि धयों में जनता का पूर्ण वश्वास होना चाहिए।

इन सब बातों के बावजूद वे संसदीय प्रणाली की सफलता को लेकर आशान्वित नहीं थे क्यों क यूरोप में वे इस व्यवस्था के खलाफ असंतोष तथा जबरदस्त प्रति क्रया देख चुके थे। उनका वचार था क बिना सामाजिक व आ र्थक लोकतंत्र के राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। भारतीय लोकतंत्र के संबंध में उन्होंने कहा लोगों में करिश्माति नेतृत्व के प्रति जाति प्रथा व सामाजिक वषमताए आदि प्रवृतियां इसे कमजोर बनाती है। ऐसा उनका राजनीतिक वचार था।

राज्य संबंधी वचार- अंबेडकर के अनुसार प्रत्येक नागरिक को अन्त:करण की स्वतंत्रता तथा कसी भी धर्म को मानने व उसका प्रचार करने की आजादी होनी चाहिए। कसी भी व्यक्ति को जबरदस्ती कसी धर्म का अनुयायी नहीं बनाया जाना चाहिए। राष्ट्र का कोई धर्म नहीं होना चाहिए। अंबेडकर के अनुसार राज्य पूर्णता धर्मनिरपेक्ष होना चाहिए तथा सभी धर्मों के लोगो को समान अवसर प्रदान कया जाना चाहिए। अंबेडकर के मत के अनुसार सामाजिक आ र्थक परिवर्तन व्यवस्था की स्थापना के बावजूद भी वे राज्य को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सर्वशक्तिमान व निरंकुश नहीं बनाते। उनके वचार के मुताबिक राज्य तो समाज सेवा का एक स्रोत मात्र है।

शासन के कार्य संबंधी वचार- बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के कार्य का मुख्य क्षेत्र संवैधानिक लोकतंत्र पर था। लोगों को एकता के बंधन में बांधने के लए और सामूहिक कार्यों में लोगों को समान सहभा गता प्रदान करने के लए व ध का शासन आवश्यक था। फर भी वे अमेरिकी ढांचे की अध्यक्षीय शासन प्रणाली का ज्यादा सही व उपयुक्त मानते थे। इसमें शासन की शक्ति व व्यक्ति की स्वतंत्रता के मध्य एक संतुलन रहता है। बाबासाहेब के अनुसार कार्यपा लका, वधायिका व न्यायपा लका के मध्य शक्ति का पृथक्करण होना चाहिए। बाबा साहेब की ऐसी इच्छा थी क अच्छी कार्यपा लका के कार्य है प्रशासन में अल्पसंख्यकों को समु चत आदर देना और बहुसंख्यक की निरंकुशता को रोकना। अल्पसंख्यको के ऐसे प्रतिनि धयों को प्रशासन में हिस्सेदार ना बनाना जिन्हें अल्पसंख्यक समुदाय का वश्वास प्राप्त ना हो।

अ धकार संबंधी अंबेडकर साहब का वचार- अंबेडकर का तर्क था क वश्व और मानव को मानव के ववेक और उधम से समझा जा सकता है। वे व्यक्ति के कतिपय ऐसे अ धकारो के समर्थक थे जिन्हे सं वधान में स्थान दिया जाना चाहिए। उनके लए अ धकारों का तब तक महत्त्व नहीं था जब तक उनके पीछे संवैधानिक उपचारों का प्रावधान ना हो। वे अ धकारों के पीछे मात्र कानूनी संरक्षण ही पर्याप्त नहीं मानते थे अ पतु सामाजिक स्वीकृति भी अपरिहार्य मानते थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 11, November- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 7.077|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उपर्युक्त तथ्यों का अवलोकन करने पर हम पाते हैं क डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का सामाजिक एवं राजनीतिक चंतन मानववादी हितों के इर्द- गर्द है। वह हमेशा स्वतंत्रता समानता एवं बंधुता के समर्थक थे इनका यह सामाजिक एवं राजनीतिक चंतन हमेशा प्रसां गक है।

संदर्भ:-

1. अशोक कुमार वर्मा: प्रारं भक समाज एवं राजनीतिक दर्शन मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली सातवां संस्करण- 1999.
2. राम गोपाल संह: "सामाजिक न्याय लोकतंत्र एवं जाति व्यवस्था" रावत पब्लिकेशन जयपुर (राजस्थान)- 1999.
3. डी.आर. जटाव: "सामाजिक न्याय का सद्धांत" समानता साहित्य सदन, जयपुर (राजस्थान) 1993.
4. प्रो० नित्यानंद मश्र: नीतीश शास्त्र: सद्धांत और व्यवहार, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली-2009.
5. डा० वी० आर० अम्बेडकर: एनिहिलेशन ऑफ कास्ट, बम्बई एंड थेंकर कंपनी बम्बई महाराष्ट्र-1936.
6. पुखराज जैन व फ ड़या: राजनितिक वचार।
7. सुधांशु शेखर: वर्ण व्यवस्था और सामाजिक न्याय: डा० भीमराव अम्बेडकर के वशेष संदर्भ में।